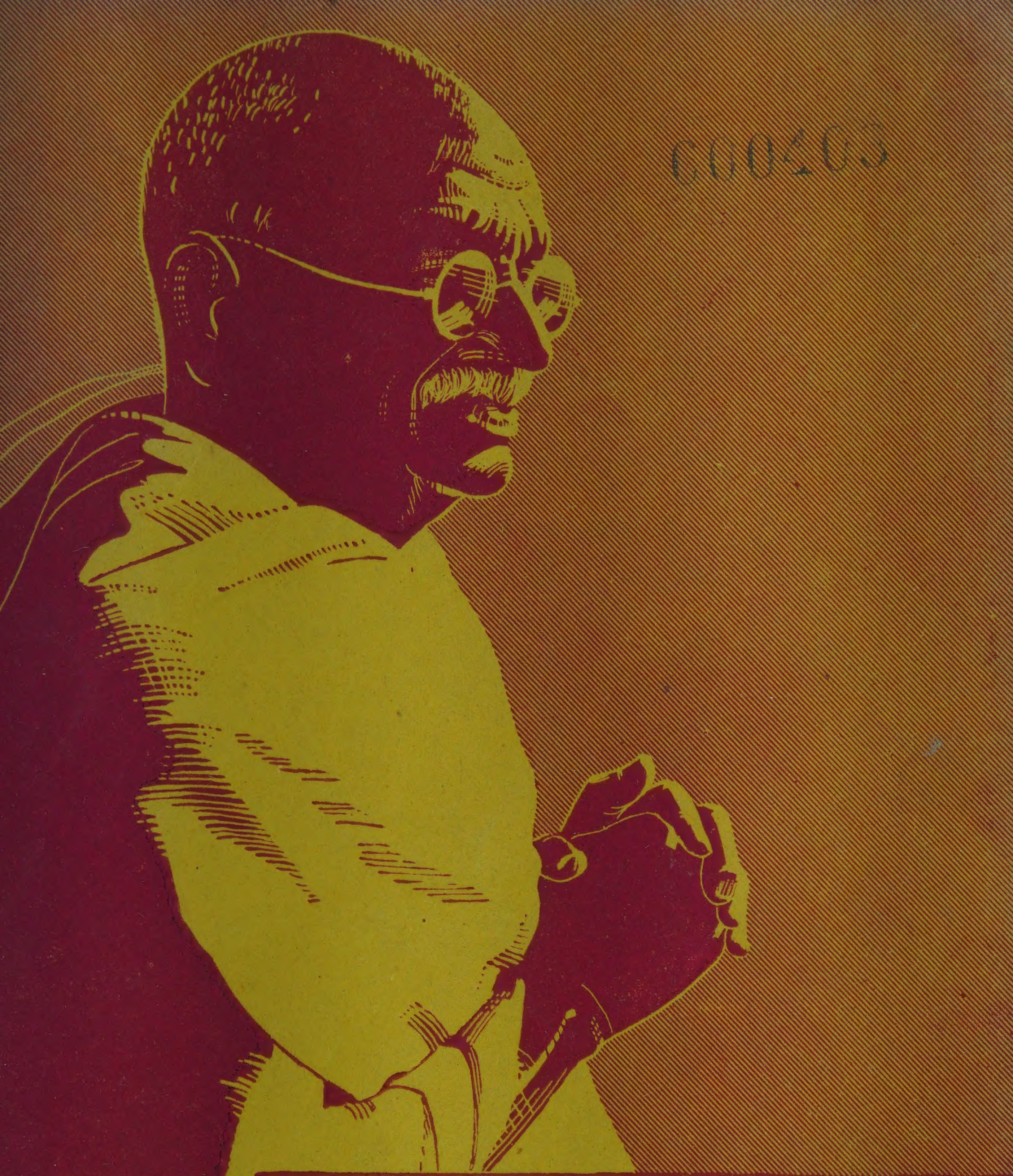


एक सत्यवीर की कथा

सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन

एक सत्यवीर की कथा

अर्थात्

सुकरात की सफ़ाई

मो० क० गांधी

१९५५

सत्साहित्य-प्रकाशन

प्रकाशक

मार्तण्ड उपाध्याय,

मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,

नई दिल्ली

नवजीवन प्रकाशन की सहमति से

चौथी बार : १९५५

मूल्य

चार आना

मुद्रक

नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,

दिल्ली

प्रस्तावना

लोकोत्तर पुरुष, नीतिवान्, वीर सुकरात (साक्रेटीज़) का जन्म ईसा से ४७१ बरस पहले यूनान (ग्रीस) देश में हुआ था। उसका जीवन नीति और परोपकार के काम करने में बीता था। उसका सदाचार और उसके गुण 'देखि न सकहिं पराइ विभूती' स्वभाव के कुछ मनुष्यों से देखे न गए। इससे वे उसके ऊपर झूठी तोहमतें लगाने लगे। सुकरात खुदा से बहुत डरकर चलनेवाला था, इसलिए मनुष्यों की आलोचनाओं की कम परवाह करता था। वह मौत से नहीं डरता था। खुद सुधारक था और एथेंस के लोगों के चरित्र में जो बुराइयां घुस गईं थी उन्हें निकाल देने का यत्न कर रहा था। इस कोशिश में बहुतों से उसका मिलना-जुलना होता। युवकों के मन पर उसका बहुत अच्छा असर पड़ा था और उनकी टोलियां उसके पीछे-पीछे फिरा करती थीं। इससे कुछ लुटेरों को लूटने का मौका मिलना बन्द हो गया। दूसरों को अनीति के गढ़े में गिराकर अपनी जेबें भरनेवालों की कमाई में बाधा पड़ने लगी।

एथेंस का नियम था कि जो उसके विधान में बताये हुए धर्म का अनुसरण न करे और दूसरों को उस पर चलना न सिखाये वह अपराधी माना जाय। अपराध साबित हो जानेपर उस को मौत की सजा दी जाती थी।

सुकरात खुद तो राज-धर्म का अनुसरण करता, पर दूसरों को, उसमें जो पाखंड घुस गया था उसकी जड़ खोद देने का बेधड़क उपदेश देता था। खुद भी ढोंग-ढकोसले से दूर रहता था।

एथेंस के कानून के अनुसार इस तरह के अपराध का विचार पंचों के सामने होता। सुकरात पर राजधर्म का उल्लंघन करने और दूसरों को वैसा करने का उपदेश देने का इलजाम लगाया गया। उसकी सुनवाई पंचों की सभा के सामने हुई। पंचों में से बहुतों को सुकरात की शिक्षा से नुकसान पहुंचा था। इससे वे उसके साथ बैर-भाव रखते थे। उन्होंने सुकरात को अन्यायपूर्वक अपराधी ठहराया और उसे ज़हर का प्याला पीकर मर जाने की सज़ा दी। किसी को मौत की सजा दी जाती तो उसे मौत के मुंह में पहुंचाने के लिए अनेक उपाय किये जाते थे। सुकरात के लिए उनमें से विषपान करके मरने की सज़ा तजवीज हुई।

यह वीर पुरुष अपने हाथ से ज़हर का प्याला पीकर इस दुनिया

से कूच कर गया। जिस दिन उसे ज़हर पीना था उसी दिन उसने शरीर के नाशवान् होने और आत्मा के अमरत्व पर अपने एक मित्र शिष्य के सामने व्याख्यान दिया। कहते हैं कि ज़हर पीने की आखिरी घड़ी आने तक सुकरात तनिक भी डरा-डिगा नहीं और हंसते चेहरे से उसे उठाकर पी गया। उसे जो व्याख्यान देना था उसका अन्तिम वाक्य बोलकर, हम शरबत का प्याला जैसे आनन्द से पीते हैं वैसे, वह ज़हर का प्याला पी गया।

आज दुनिया सुकरात को याद करती है। उसके उपदेशों से लाखों का भला हुआ है। उसपर इलज़ाम लगाने और उसे सज़ा देनेवालों को दुनिया कोसती है। सुकरात अमर हो गया। उसके और उस जैसों के नाम से यूनान गौरवशाली हुआ है।

अपनी सफ़ाई देते हुए सुकरात ने जो भाषण दिया उसके नोट उसके प्रख्यात शिष्य अफलातून (प्लेटो) ने ले लिये थे। उसका उलथा दुनिया की बहुतेरी भाषाओं में हुआ है। उसकी सफाई बड़ी सुन्दर और नीतितत्त्व से भरी हुई है। इसी से हम यहां उसका उलथा दे रहे हैं। हम उसके एक-एक शब्द का अनुवाद न करके सारमात्र दे रहे हैं।

हमें चाहिए कि हम सुकरात की तरह जीना और मरना सीखें। सुकरात बहुत बड़ा सत्याग्रही भी था। उसने अपने ही देश की जनता के सामने सत्याग्रह किया। उससे ग्रीक-जनता को महत्ता मिली। कायरपन के कारण, अथवा हमें समाज में आदर-मान न मिलेगा या जान गंवानी होगी इस डर से, जबतक हम अपने भीतर भरी खोट-खराबियों को न देखेंगे, देखकर भी जनता का ध्यान उनकी ओर न खींचेंगे, तबतक हम बाहर के सैकड़ों इलाज करते रहें, कांग्रेसें करते रहें, एक्सट्रीमिस्ट (गरम दलवाले) बनते रहें, फिर भी हिन्दुस्तान का भला होने का नहीं। उसका हित इन बातों से नहीं होने वाला है। असली रोग को पहचान कर, उसको प्रकट-प्रकाशित करके, उसपर लगनेवाली दवा खा-पीकर जब भारत का शरीर भीतर-बाहर से रोग-रहित हो जायगा तब अंग्रेजों के या और किसी के ज़ुल्मरूपी कीड़े उसका कुछ बिगाड़ न सकेंगे। पर उसकी देह में ही विकार भरा होगा तो एक जाति के छुतहे कीटाणुओं का नाश करने पर दूसरी जाति के कीड़े उसमें घुस जायंगे और उसको मिट्टी में मिला देंगे।

हमारे पाठक इन विचारों को ध्यान में रखकर सुकरात-सरीखे महात्मा के वचनों को अमृत तुल्य जान उसके घूंट प्रेम से पियें और उससे अपने अन्दर के रोग का नाश कर दूसरों के वैसे रोग का नाश करने में सहायक हों—इसी उद्देश्य से सुकरात के भाषण का सार हम यहां दे रहे हैं।

४-४-१९०८ **—मो० क० गांधी**

एक सत्यवीर की कथा

अर्थात्

सुकरात की सफाई

एथेंस के लोगो, मुझपर इलजाम लगानेवालों के वचनों से आप कहां तक प्रभावित हुए हैं, यह मैं नहीं जानता। उनके वचन ऐसे मर्म-भरे थे और सुनने में ऐसे सच्चे लगते थे कि मैं खुद अपनी सुध-बुध भूल गया। फिर भी मेरा कहना है कि उन्होंने जो कुछ कहा है, सब झूठ है। उनका झूठ मुझे बहुत विचित्र लगा। उन्होंने आपसे कहा है कि आप लोग मेरे लच्छेदार भाषण के भुलावे में न आयं। लच्छेदारी तो वे ही बरतते हैं, मुझे तो वह आती ही नहीं। हां, सत्य को ही वे वक्तृत्व-कौशल या लच्छेदारी कहते हों तो वह मुझमें है। यह मैं स्वीकार करता हूं। पर वे मुझे सत्यवादी मानते हों तो वे जिसे वक्तृत्व-कौशल मानते हैं वह मुझमें नहीं है। वे बोलते तो हैं बड़े ठाट से, फिर भी उनकी बातों में सचाई नाम को नहीं है। मुझे तो आपके सामने वही रखना है जो सत्य है और वह सब-का-सब रख देना है, कुछ चुराना-छिपाना नहीं है। मैं कोई गढ़ा-गढ़ाया भाषण लेकर आपके सामने नहीं आया हूं। मैं बूढ़ा हुआ। मुझे आपके सामने लच्छेदारी या शान नहीं दिखानी है।

सो अगर मैं आपके सामने सदा जिस तरह से बोलता रहा उसी सरलता से आज भी बोलूं तो आपको अचरज न होना चाहिए। अब मैं सत्तर के पार पहुंचा और अदालत के सामने आने का मेरे लिए यह पहला ही मौका है। अदालत के शान-दबदबे और उस की भाषा से मैं अनजान हूं। अतः आप लोग मेरे शब्दों का ख़याल न कीजियेगा। जज की तरह आप का काम भी यही देखना है कि जो कुछ मैं कहता हूं वह न्यायसंगत है या नहीं। मेरा काम यह है कि आपके सामने केवल सत्य ही रखूं।

मुझपर बहुत-से लोगों ने तोहमतें लगाई हैं। उनमें से एक यह है कि मैं बहुत-सी बातों की खोज-पूछ किया करता हूं, खोटे को खरा करके दिखाता हूं और लोगों को बहकाता हूं। मुझपर यह इलजाम लगानेवाले बलवान व्यक्ति हैं। वे कहते हैं कि मैं अपने बाप-दादा के धर्म का पालन नहीं करता। ये बातें बचपन से आपके कानों में भरकर आपका मन बिगाड़ा गया है। इसके सिवा ये बातें मेरी गैरहाजिरी में कही गईं, जिससे आपके सामने मैं अपनी सफाई भी न दे सका। मैं चाहता हूं कि उन्होंने जलन या दुष्टतावश मेरी शिकायतें करके आपके मन में मेरी तरफ से जो बुराई भर दी है वह दूर हो जाय। पर मैं जानता हूं कि यह काम कठिन है। फिर भी मुझे जो कहना उचित है वह कहूंगा ही, फल ईश्वर को जो मंजूर हो, वह हो।

मुझे बदनाम करनेवाले जो कुछ कहते हैं उसका सार मैंने आपको सुना दिया। वे मेरा नाटक भी करते हैं। उसमें दिखाते हैं कि मैं हवा में उड़ने की आजमाइशें किया करता हूं। मुझे तो इसका पता तक नहीं है। मैं यह नहीं कहता कि हवा में उड़ना नामुमकिन है। कोई इस कला को जानता हो तो वह भले ही इसका प्रयोग करे; पर मैं इससे बिल्कुल कोरा हूं। फिर भी मेलिटस मुझपर वैसा आरोप लगाता है। आपमें से बहुतों को रोज मुझसे मिलने का मौका मिलता रहा है। आप एक-दूसरे से पूछ कर देख लें कि क्या किसी के सामने कभी मेरे मुंह से ऐसी बात भी निकली है? और अगर आप सभी कह सकते हैं कि मैंने किसीसे ऐसी बात नहीं कही तो आप समझ सकते हैं कि जैसे यह आरोप झूठा है वैसे ही और आरोप भी होने चाहिए।

मेरे विरोधी यह भी कहते हैं कि मैं लोगों को पढ़ाता और उसके बदले में उनसे पैसे लेता हूं। यह तोहमत भी झूठी है। यह बात सच हो तो मैं इसमें कोई दोष नहीं समझता। इसमें से बहुतेरे शिक्षक का काम करके अपनी मेहनत की मजदूरी लेते हैं। वे अपना काम ठीक तौर से करते हों और उसके बदले में पैसा लेते हों तो इसमें कोई बेआबरूई मैं नहीं मानता। आपके पास कोई घोड़ा या बैल हो तो उसे सिखाने के लिए आप किसी को रखेंगे ही और उसे पैसा भी देंगे। तब क्या हम अपने बच्चों को नागरिक रूप से

अपने कर्त्तव्यों का पालन करनेवाली शिक्षा न दिलायें ? और कोई ऐसा शिक्षक मिल जाय जो उन्हें अच्छे रास्ते पर ले जाता हो तो हम उसे धन और मान दोनों न दें ? पर मुझे तो इस तरह सिखाना आया ही नहीं।

तब आप पूछेंगे कि अगर तुझमें कोई खोट-खराबी नहीं है तो तुझपर इतनी तोहमतें क्यों लगाई गईं ? अगर तूने लोगों को बहकाया नहीं है तो किसी दूसरे पर इसका इलजाम न लगाया जाकर तुझपर ही क्यों लगाया जाता है ? आप मुझसे ऐसा सवाल करें तो वह अनुचित नहीं माना जायगा। मुझपर तोहमतें क्यों लगाई गई हैं इसे बताने का मैं यत्न करूंगा। आप शायद सोचें कि मैं मजाक कर रहा हूँ। पर मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जो कुछ सत्य है, वही मैं कहूँगा। लोग जो मुझपर दोष लगाते हैं उसका कारण यह है कि मेरे पास एक विशेष ज्ञान है। वह ज्ञान कैसा है यह आप पूछें तो मैं कहूँगा कि भले ही वह मेरा अभिमान हो; पर वह जितना मुझ-में है उतना दूसरों में नहीं है। देव-वाणी भी यह बात आपको बता चुकी है।

इस देव-वाणी को मैंने झट स्वीकार नहीं कर लिया। अतः हममें जो सबसे अधिक ज्ञानवान पुरुष समझा जाता था, मैं उसके पास गया। उससे मैंने कितने ही प्रश्न किये। उनसे मुझे मालूम हुआ कि उसके पास ज्ञान का दम्भमात्र है। मैं ज्ञानी होने का ढोंग नहीं

करता। मुझे जान पड़ा कि मुझे इस अंश में उससे बड़ा ज्ञानी होना चाहिए, क्योंकि जो आदमी अपना अज्ञान जानता है वह अपना अज्ञान न जाननेवाले से अधिक ज्ञानी है, यह कहा ही जा सकता है। पर जब उक्त ज्ञानी पुरुष को मैंने उसका अज्ञान बता दिया तब मैं उसकी आंख का कांटा बन गया। इसके बाद मैं दूसरे ज्ञानी के पास गया। उसने भी ज्ञान का ढोंग किया, अपना अज्ञान छिपाया। मैंने यह बात उसे बता दी और वह भी मेरा दुश्मन हो गया। इस तरह मैं बहुतों के पास गया और सभी ने अपना अज्ञान छिपाया। मैंने हरएक का दंभ उसपर प्रकट कर दिया और सबका बैरी बना। मैंने देखा कि ज्ञान का दंभ जहां जितना अधिक है वहां वास्तव में उतना ही अधिक अंधकार है। यह भी देखा कि हम अति अज्ञान हैं, यह बोध ही सच्चा ज्ञान है।

मैं बहुत-से कवियों के पास गया, बहुत-से हुनर-मंदों, कारीगरों के पास गया। मैंने देखा कि बहुतेरे कवि अपनी रचना का अर्थ-भाव नहीं बता सकते। हुनरवाले निःसन्देह अपने हुनर में बढ़े-चढ़े थे, पर अपनी कला-कुशलता के गर्व में उन्होंने यह मान लिया था कि दूसरे विषयों में भी उनके पास दूसरों से अधिक ज्ञान होना चाहिए। इसी प्रकार सभी गोते खा रहे थे। मैंने देखा कि मुझे अपने अज्ञान का पता और सब लोगों से अधिक है।

अब आप समझ सकते हैं कि मुझपर तोहमतें

लगानेवाले इतने अधिक क्यों हैं। हम कैसे अजान हैं, मनुष्य का ज्ञान कितना तुच्छ, नगण्य है इसकी हूबहू तसवीर खींचने की कोशिश में लग जाने के कारण मैं राज्य की और कोई सेवा न कर सका। अपना भी बहुत गँवाया और भिखारी बन रहा हूँ। पर मेरा दिल कहता है कि लोगों को उनके अज्ञान का ज्ञान करा कर मैं ईश्वर की ही सेवा कर रहा हूँ। यह सेवा स्वीकार करने के कारण लोगों की नाराजी मुझपर बढ़ गई।

इसके सिवा बहुत से नौजवान, जिनके पास अधिक काम-धंधा नहीं होता, मेरे पीछे-पीछे फिरा करते हैं और जो सवाल मैं करता हूँ वही वे भी अर्द्ध-ज्ञानियों से किया करते हैं। इससे जिनकी पोल खुलती है वे लोग मुझपर क्रुद्ध होते हैं। मुझपर वे कोई दूसरी तोहमत तो लगा नहीं सकते, इसलिए कहते हैं—"यह आदमी उचित से अधिक गहराई में बैठा करता है। हमारे देवताओं को नहीं मानता और बुरे को भला कहकर दिखाया करता है।" ये लोग अपने अज्ञान का परदा ढका रखने की खातिर आप सब लोगों के कान मेरे खिलाफ बेजा तौर पर भर रहे हैं। इनमें मेलिटस और दूसरे लोग भी हैं। मेलिटस कहता है कि मैं एथेंस के युवकों को बिगाड़ता हूँ। अब मैं मेलिटस से ही कुछ सवाल पूछता हूँ—

मेलिटस, क्या तुम यह नहीं सोचते कि युवक को हम जितना सद्गुणी बना सकें बनाना चाहिए ?

मेलिटस---मैं ऐसा सोचता हूँ।

सुकरात---तब युवकों को सद्गुणी कौन बनाता है।

मेलिटस---कानून।

सुकरात---मेरे सवाल का जवाब नहीं मिला। मैं पूछता हूँ कि कौन उन्हें भला बनाता है ?

मेलिटस---यह तो न्यायाधीश करते हैं।

सुकरात---क्या तुम्हारा कहना यह है कि जो लोग न्यायासन पर विराज रहे हैं वे सद्गुण सिखा सकते हैं ?

मेलिटस---बेशक।

सुकरात---सभी या उनमें से कुछ ही ?

मेलिटस---सभी।

सुकरात---तुमने ठीक कहा। अब मैं पूछता हूँ कि जो लोग यहां सुनने के लिए आये हैं वे वैसी शिक्षा दे सकते हैं या नहीं ?

मेलिटस---वे भी दे सकते हैं।

सुकरात---तब तुम यह कहते हो कि एथेंस के सभी लोग सद्गुण सिखा सकते हैं। अकेला मैं ही युवकों को बिगाड़ता हूँ।

मेलिटस---हां, मैं यही कहता हूँ।

सुकरात---तुमने तो मुझपर भारी तोहमत लगा दी। तुम जो बात कहते हो वह घोड़ों पर भी घटित होती है। तुम यह कहोगे कि अधिकांश जन उन्हें सुधार सकते हैं, बिगाड़नेवाले थोड़े ही होते हैं। पर

सच्ची बात यह है कि घोड़ों को तालीम देनेवाले इने-गिने ही होते हैं, बाकी सब लोग तो इस विषय में बिलकुल कोरे होते हैं। फिर क्या तुम यह स्वीकार न करोगे कि यही नियम और प्राणियों पर भी लगता होगा ? मुझे तो जान पड़ता है कि तुम्हें यह बात कबूल करनी ही होगी, क्योंकि वह एकदम स्पष्ट है। और अगर कहो कि मनुष्य के लिए दूसरा नियम है तो मैं देखता हूँ कि तुम बिना समझे दोषारोप कर रहे हो। फिर क्या तुम इसे मानने से इन्कार करोगे कि जो लोग बुरे आदमियों की सोहबत में अधिक समय रहते हैं उनपर उनका असर पड़े बिना नहीं रहता ?

मेलिटस—यह तो मैं स्वीकार करूंगा।

सुकरात—तब तुम यह कहोगे कि कोई-कोई आदमी खुद ही अपनी बुराई करना चाहते हैं ?

मेलिटस—यह तो मैं नहीं कह सकता ?

सुकरात—तब तुम बताओ कि मैं युवकों को जान-बूझ कर बिगाड़ रहा हूँ या अनजान में ?

मेलिटस—मेरा कहना है कि तुम उन्हें जान-बूझ कर बिगाड़ते हो।

सुकरात—यह तुम कैसे कह सकते हो ? तुम जवान हो, मैं बूढ़ा हूँ। तुम यह मानते हो कि मैं इतना भी नहीं समझ सकता कि अगर मैं दूसरों को बिगाड़ूँगा तो मैं खुद भी और अधिक बिगड़ूँगा, क्योंकि हम यह देख चुके हैं कि बुरे की सोहबत करनेवाला बुरा बनता है।

मैं इस तरह अपनी हानि करना पसन्द करता हूँ, इसे कोई स्वीकार न करेगा, और मेरी यह दलील सही हो तो दूसरों को जान-बूझकर बिगाड़ने का आरोप उड़ जाता है। अगर यह कहो कि मैं बिना जाने उन्हें बिगाड़ता हूँ तो तुम्हारा फर्ज़ मुझे शिक्षा देना था। पर तुमने मुझे सुधारने का यत्न नहीं किया। तुम तो मेरे पास भी न फटके। तुमने मुझे दण्ड दिलाने के लिए ही यहां खड़ा कराया है।

इस तरह एथेंस-वासियो, मेलिटस के कथन से यह स्पष्ट है कि उसने कभी गम्भीर विषयों पर सोचने-विचारने का कष्ट नहीं किया। अच्छा, अब मैं युवकों को किस तरह बिगाड़ता हूँ, इसपर विचार करें। मेलिटस, तुम कहते हो न कि हमारा नगर जिन देवताओं को मानता है उन्हें न मानने की शिक्षा देकर मैं युवकों को बिगाड़ता हूँ?

मेलिटस——बेशक, मैं ऐसा ही कहता हूँ।

सुकरात——तब तुम क्या कहते हो? नगर जिन देवताओं को मानता है मैं उन्हें न मानने की शिक्षा देता हूँ या दूसरे देवताओं में आस्था रखने की?

मेलिटस——मेरा तो यह कहना है कि तुम्हें देव-मात्र में विश्वास नहीं है।

सुकरात——शाबाश मेलिटस! तब तो तुम यह कहते हो कि सारा शहर सूर्य-चन्द्र को मानता है, पर अकेला मैं ही उन्हें नहीं मानता।

मेलिटस——मैं तो यह कहता हूँ कि तुम मानते हो

कि सूर्य पत्थर है और चन्द्रमा मिट्टी का ढेला।

सुकरात——तुम्हारी बात कौन मानेगा? जो इलजाम तुमने मुझपर लगाया है वह किसी के गले के नीचे नहीं उतरेगा। कारण यह कि अगर मैं लोगों को यह सिखाने जाता हूँ तो सब कहेंगे कि यह तो कोई नई सीख नहीं है, दूसरे भी ऐसा कहते आये हैं। फिर मैंने खुद उनका कहा नहीं माना। पर अगर तुम सूर्य-चन्द्र के बारे में मुझपर ऐसा इलजाम लगा सकते हो तो तुम यह भी कह सकते हो कि ईश्वर है, यह भी मैं नहीं मानता।

मेलिटस——मैं पक्के तौर से कहता हूँ कि तुम्हें ईश्वर का अस्तित्व मानने से भी इन्कार है।

सुकरात——तब तो जो बात हो नहीं सकती उसे तुम जान-बूझकर कह रहे हो। ईश्वर नहीं है, यह मुझसे कैसे कहा जा सकता है? कोई कह सकता है कि मनुष्यों से सम्बन्ध रखनेवाली चीजें तो हैं; पर स्वयं मनुष्यों का अस्तित्व नहीं है? घोड़ों से सम्बन्ध रखनेवाली चीजें तो हैं; पर खुद घोड़ा नहीं है? फरिश्तों से सम्बन्ध रखनेवाली चीजें हैं, पर खुद फरिश्तों की हस्ती नहीं है?

मेलिटस——जिससे सम्बन्ध रखनेवाली चीजें हों उसका अस्तित्व होता है।

सुकरात——तुम स्वीकार करते हो कि मैं देवताओं के विषय में बातें करता हूँ, अतः तुम्हें यह मानना ही चाहिए कि मैं देवताओं का अस्तित्व स्वीकार करता हूँ।

इसका अर्थ यह है कि अब मेलिटस के लगाये हुए

आरोप के बारे में मुझे अधिक कहने की आवश्यकता नहीं रही। पर मैं मानता हूँ कि आप लोगों में से बहुतेरे मेरे विरोधी हैं। मेलिटस वगैरह जो कुछ कहते हैं उससे तो आप लोग शायद मुझे अपराधी नहीं ठहरायें, पर जनसाधारण की जलन और उनके लगाये हुए दोष से मैं अपराधी बन जाऊँगा। परन्तु इस तरह तो कितने ही भले आदमियों पर बुरे दिन आ चुके हैं और अभी औरों पर भी आयंगे।

कोई कह सकता है—"सुकरात, जिस खोज-पूछ की खातिर तुम्हें मौत की सजा भुगतनी पड़े उसमें लगे रहने में तुम्हें शर्म नहीं आती?" ऐसे लोगों से मैं भली भांति कह सकता हूँ कि तुम्हारा कहना ठीक नहीं। मौत की जोखिम तो एक नगण्य मनुष्य को भी लेनी ही होती है। अच्छे आदमी को तो कोई भी काम करते समय एक ही बात सोचनी चाहिए और वह यह कि यह बात मुनासिब है या नामुनासिब, यह काम भले आदमी के योग्य है या नहीं। तुम कह सकते हो कि इस दृष्टि से जिस काम में मृत्यु का भय हो वह खराब है। तो फिर ट्राय के महान योद्धाओं को जिन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए रणभूमि में वीरगति प्राप्त की, खराब आदमी मानना चाहिए। पेट्रोक्लस से उसकी मां ने कहा—"अगर तू हेक्टर को मारेगा तो तुझे भी तुरंत मरना पड़ेगा।" पेट्रोक्लस ने इसका यह जवाब दिया—"हेक्टर को मार कर अगर मुझे मरना पड़े तो यह बात कायर बनकर जीने से हजार दरजे अच्छी कही

जायगी ।" पेट्रोक्लस मौत से डरा नहीं, यह सत्य है। कोई भी आदमी जब अपनी मरजी से या अपने अफसर के आदेश से कोई कदम उठाये तो उसे मौत के डर से उस स्थान से हटना न चाहिए ।

फिर आप देखें कि जब मैं राज्य की नौकरी करता था तो मेरे अफसर ने मुझे जिस जगह की ड्यूटी सौंपी वहां से, मौत का खतरा होते हुए भी, मैं हिला नहीं। अब जब मेरा दिल ज्ञानविशेष के ग्रहण का आदेश दे रहा है तब, मैं मौत के डर से उसे स्वीकार न करूं या उसके बारे में कुछ न बोलूं तो यह कैसे अचरज की बात होगी ! इससे मेरा यह मानना गलत साबित होगा कि अगर मैं मौत से डरता हूँ तो मैं अज्ञान हूँ, और अगर मैं अज्ञान होते हुए ज्ञानी होने का ढोंग करूँ तो बेशक, मुझपर मुकदमा चलना चाहिए । मौत से डरना ज्ञान का दंभ करने के बराबर है, क्योंकि मौत के बारे में डरने जैसी कोई बात है, इसे कौन जान सका है ? यह क्यों न मानें कि मृत्यु मनुष्य का सबसे अधिक उपकार करनेवाली वस्तु है। पर लोग मौत से डरते हैं, कौन जाने उन्हें इसकी खबर न हो कि मौत बुरी-से-बुरी चीज है । और जिसे हम न जानते हों उसे जानने का गर्व रखने से बढ़कर अज्ञान और क्या हो सकता है ? ऐसी बातों में मेरे विचार दूसरों से भिन्न हैं । मुझमें अगर कोई बुद्धिमानी है तो यही कि मैं जानता हूँ कि मैं मौत के बारे में कुछ नहीं जानता । इसलिए इस विषय में अपना अज्ञान मैं छिपाता नहीं; पर अनैतिक

और अपने अफसर की उचित आज्ञा के विरुद्ध आचरण को मैं दोष मानता हूँ। अतः जिसे मैं ठीक मानता हूँ उसे किसी तरह के भय से कभी छोड़नेवाला नहीं। इसलिए अगर आप मुझपर आरोप करनेवालों की बात न मानकर यह कहें कि "सुकरात, हम इस वक्त तो तुझे सजा नहीं देते, पर शर्त यह होगी कि तू जिस अन्वेषण में लगा है उसे छोड़ दे। इसके बाद तूने वैसा किया तो तुझे निश्चय ही मृत्यु-दण्ड मिलेगा," तो मैं तुम्हें यह जवाब दूंगा—एथेंस-वासियो, मैं तुम्हारी इज्जत करता हूँ, तुम्हें प्यार करता हूँ, पर तुम्हारा हुक्म मानने से ईश्वर के आज्ञाधीन होना अधिक अच्छा समझता हूँ। जबतक मुझमें जान और दम है, मेरा तत्वज्ञान का अनुशीलन जारी रहेगा, और जो कोई मुझसे मिलेगा और मेरी बात सुनेगा उसे नीचे लिखा उपदेश दूंगा—

"हे एथेंस के उत्तम जनो, तुम एक बड़े नामवाले नगर के रहनेवाले हो। तुम बलवान माने जाते हो, बुद्धिमान गिने जाते हो। फिर भी तुम मालदार बनना चाहते हो। पैसे मिलने के लिए तुम क्या करते हो, यह नहीं देखते। तुम्हें पद पाने की, नाम-बड़ाई मिलने की चिन्ता रहती है। ऐसा करते हुए तुम्हें शर्म क्यों नहीं आती? तुम्हें अपनी, अपनी आत्मा की, अपने ज्ञान की, सत्य की परवाह नहीं है। तुम्हारी आत्मा कैसे ऊपर उठे, इसकी फिक्र तुम्हें नहीं रहती!"

मेरे ऐसा कहनेपर अगर कोई मुझसे कहेगा कि

मैं अपनी आत्मा का खयाल रखता हूँ, सत्य का पालन करता हूँ, तो मैं ऐसे आदमी को छोड़ नहीं दूंगा। मैं उससे पूछूंगा कि तुम किस तरह यह सब कहते हो। मैं उसे कसौटी पर कसूंगा, तब जाने दूंगा। उसे कसते हुए अगर मैंने देखा कि वह सचाई का ढोंग करता है या वस्तुतः उसमें सचाई बिल्कुल है ही नहीं तो मैं उसकी भर्त्सना करूंगा और पक्के तौर पर बता दूंगा कि दुनिया में जो वस्तु अति मूल्यवान है उसकी कीमत तो तुम्हारी निगाह में कुछ भी नहीं ग्रौर जिसकी दरअसल कोई कीमत नहीं, उसे तुम मूल्यवान मानते हो। मैं सबके साथ इसी तरह बर्ताव करूंगा, फिर चाहे वह इस नगर का निवासी हो या परदेसी, जवान हो या बूढ़ा। तुमसे तो मैं बहुत जोर के साथ यही बात कहूंगा, क्योंकि तुम मुझे अधिक जानते-पहचानते हो। तुमसे मेरे अधिक वास्ते हैं। इसका विश्वास रखो कि मैं जो कहता हूँ वह ईश्वरीय आदेश है। मैं तो यहां तक कहता हूँ कि मुझे ईश्वर का आदेश बहुत प्यारा है और उसमें इस नगर का परम कल्याण है। मेरा एक ही धंधा है। मैं छोटे-बड़े सबको एक ही बात समझाया करता हूँ और वह यह कि अपने जान-माल की थोड़ी चिंता करो; पर आत्मा की पूरी संभाल रखो। उसके उत्कर्ष का उपाय करो। सद्‌गुण या नेकी दौलत से पैदा नहीं होती, पर सद्‌गुण हो तो धन और दूसरी दुनियवी चीजें मिल जायंगी। अगर कोई कहे कि इस तरह की सीख देकर मैं इस नगर

के निवासियों को बिगाड़ता हूँ तो इसका अर्थ यह है कि सद्गुण दुर्गुण है। जो कोई कहता है कि मैं इसके सिवा और कोई बात कहता हूँ वह आपको बहकाता है।

इसलिए मैं आपसे कहता हूँ कि आप मेरे खिलाफ कही गई बातों को मानें या न मानें, मुझे छोड़ें या न छोड़ें और मुझे एक नहीं अनेक बार मरना पड़े, तो भी मैं अपनी रीति-नीति छोड़नेवाला नहीं।

मेरी बातों से आप चिढ़ें नहीं, बल्कि उन्हें ध्यान से सुनें, क्योंकि मैं यह मानता हूँ कि मेरे वचन सुनने में आपका लाभ है। अब जो बात मैं कहनेवाला हूँ उसे सुनकर शायद आपको गुस्सा आये, पर ऐसा न कर मेरी बातों को ध्यान से सुनिए। आपने मुझे मौत की सजा दी तो, मैं जैसा हूँ वैसा होने से, मेरा जितना नुकसान होगा उससे ज्यादा आपका होगा। मेलिटस या दूसरा कोई आदमी मेरी हानि नहीं कर सकता, मेरी हानि कर सकने की शक्ति ही उनमें नहीं है। अच्छे आदमी की हानि उससे नीचे दरजे का आदमी कर सके, यह हो ही नहीं सकता। आपके आरोप से मुमकिन है कि मुझे मौत की सजा मिले, मुमकिन है देश-निकाला दिया जाय, मेरे हक छीन लिये जायं। आप समझते होंगे कि ऐसा हुआ तो यह मेरा भारी नुकसान होना माना जायगा। पर मैं इसे नुकसान नहीं मानता। मैं तो मानता हूँ कि दूसरे को अन्यायपूर्वक मरवा डालने की कोशिश करनेवाला खुद अपनी हानि करता है। इसलिए यह न समझना कि मैं यह सब कहकर

अपना बचाव कर रहा हूँ । आपके सामने खड़ा होकर जो मैं यह फरियाद कर रहा हूँ वह आपके ही लिए है। आप ईश्वरीय आदेश का उल्लंघन करके अधर्म कर रहे हैं, मैं आपको उससे बचाना चाहता हूँ । आप मुझे मार डालने का हुक्म देंगे तो आपको मुझ जैसा काम करनेवाला दूसरा मिलना कठिन है । मुझे यह कहना उचित तो नहीं, पर कहे बिना काम नहीं चलता ।

जोरावर घोड़े को लगाम की जरूरत होती है, वैसे ही आप भी बलवान हैं, इसलिए आपको लगाम लगाना जरूरी है । मैं मानता हूँ कि मैं लगाम का काम करूं, यह मेरे लिए ईश्वर का आदेश है । इसलिए आप अगर मेरी सलाह मानें तो आपको मेरी जान नहीं लेनी चाहिए । पर किसी आलसी को कोई नींद से जगाये तो वह चिढ़कर उसे मारने दौड़ता है । हो सकता है, आप भी इसी तरह मुझपर क्रुद्ध होकर बिना सोचे-विचारे मुझे मौत के घाट उतार देने का हुक्म दें । उसके बाद मुझ जैसा दूसरा आपको न मिला तो आप फिर सो जायंगे । मैं आपका भला चाहनेवाला हूँ और मुझे ईश्वर ने आपके पास भेजा है । आप देख सकते हैं कि मैं अपना काम-धंधा छोड़कर सदा आपके भले की चिन्ता किया करता हूँ । बाप या बड़े भाई की तरह आपमें से हरएक को सीख दिया करता हूं और आपको अच्छे रास्ते पर ले जाने की कोशिश करता हूँ । इसका अगर मैंने आपसे मुआवजा मांगा होता, इससे दौलत इकट्ठी की

होती तो मुझपर संदेह करने का कारण हो सकता था। पर मुझपर आरोप करनेवालों ने भी पैसा लेने का इलजाम नहीं लगाया है और मैंने कभी पैसा लिया या मांगा नहीं, इसका सबसे बड़ा सबूत मेरी गरीबी ही है।

शायद आप पूछें कि जब मैं लोगों को सद्गुणी होने की सलाह दिया करता हूँ और इसके लिए दर-दर भटकता हूँ तब नगर के हित के लिए राजनैतिक कामों में हिस्सा क्यों नहीं लेता ? इसका कारण मैं अनेक बार बता चुका हूँ। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मेरे कानों में देववाणी सुनाई दिया करती है। वह कहती है कि तुझे राज-काज के झमेलों में नहीं पड़ना चाहिए। मैं यह भी मानता हूँ कि ऐसा हुआ तो ठीक ही हुआ। मैं इस प्रपंच में फंसा होता तो मेरा काम कभी का तमाम हो चुका होता। इससे आप या मैं किसी को कोई लाभ न होता। मैं जो कुछ सत्य है वह कहता हूँ। इससे आप नाराज न हों। जो आदमी शहर में होनेवाली अंधा-धुंधी का विरोध करे और न्यायविरुद्ध बातें न होने देने की कोशिश करे, उसकी जिंदगी अधिक दिन सही-सलामत नहीं रह सकती। इसलिए जो आदमी न्याय की निगाह से ही हर चीज को देखना चाहता हो, उसका इस झमेले में पड़ना ठीक नहीं।

मैं इस बात का सबूत आपके सामने रखूंगा। उससे आप देख लेंगे कि मैं जिसे गैरवाजिब समझूं उसे मौत के डर से भी नहीं कर सकता। उस

उदाहरण से आप यह देखेंगे कि मैं राजनीति के झमेले में उलझा होता तो मेरा नाश कभी का हो चुका होता। जो बात मैं कहनेवाला हूँ उससे आप ऊब सकते हैं, पर है वह सच। एक समय मैं आपकी सभा (सिनेट) का सदस्य था। आपने उस समय दस सेनानायकों को मौत की सजा देने की तजवीज की थी। सब सदस्यों में अकेले मैंने ही इस बात का विरोध किया। उस वक्त सब मुझे मार डालने को तैयार हो गये, पर मैं अपनी बात पर अटल रहा। मेरे दिल ने कहा कि आपके अन्यायकर कार्य में योग देने से कैद या मौत की सजा भुगत लेना मेरे लिए अधिक अच्छा होगा। यह घटना उस समय की है जब यहां लोकतन्त्र कायम था।

जब जनता के राज की जगह मुट्ठी भर लोगों की हकूमत, कुलीनतंत्र कायम हुआ, तब लियन नाम के आदमी को मृत्यु-दण्ड भोगने के लिए पकड़ लाने का हुक्म निकाला गया था। मुझे भी वह हुक्म मिला। मैं जानता था कि लियन को दी गई मौत की सजा गैरवाजिब है और उसे पकड़ने न जाना अपनी मौत को न्यौता देना था, पर मैंने अपनी मौत की परवाह न की और लियन को पकड़ने न गया। इस बीच अगर वह राज्य भंग न हो गया होता तो मेरी मौत अवश्य आई होती।

अब आप देख सकते हैं कि अगर मैं राजकाज में अधिक दिन लगा रहता और साथ ही न्यायबुद्धि

का भी पल्ला पकड़े रहता--और न्याय तो मेरा जीवन है, इसलिए मुझसे दूसरा कुछ हो ही नहीं सकता था--तो मैं इतने बरस जिंदा न रहता। अपने सारे जीवन में मैंने किसी के साथ अन्याय नहीं किया। न्याय के विरुद्ध कदम न निजी जीवन में उठाया, न सार्वजनिक जीवन में। मैंने शिक्षक होने का ढोंग कभी नहीं किया, लेकिन मेरे पास कोई कुछ जानने को आया तो मैंने उसके सवाल का जवाब देने से कभी इन्कार नहीं किया। यही नहीं, मैं गरीब-अमीर सबको अपनी शक्ति के अनुसार एक ही तरह से जवाब देता हूँ। इतने पर भी अगर मेरी बातों से किसीको भलमनसी न आई हो तो इसमें मेरा दोष न मानना चाहिए। अगर कोई कहे कि मैं एक आदमी को एक बात बताता हूँ और दूसरे आदमी को दूसरी, तो आप यही मानेंगे कि उसकी बात ठीक नहीं है।

आप जानते हैं कि बहुत से लोग मेरे पास अपना वक्त क्यों गुजारना चाहते हैं, ऐसा सवाल भी किया गया है। जो लोग ज्ञानी न होते हुए भी ज्ञान का दंभ करते हैं उनसे किये जानेवाले सवालों को सुनने के लिए दूसरे लोग सदा उत्सुक रहते हैं। इसमें उन्हें बड़ा मजा मिलता है और प्रश्न करना मैं अपना ईश्वरादिष्ट कर्त्तव्य मानता हूँ। ऐसा करके मैंने कोई बुराई नहीं की। अपनी रक्षा से अगर मैंने नौजवानों को बिगाड़ा है तो उनमें से जो आज बड़े हो गये हैं और अपना हित-अहित समझ सकते हैं वे

आपके सामने आकर मुझपर इलजाम लगायें। वे खुद आपके सामने न आयें तो उनके सगे-सम्बन्धी ही आकर फरियाद करें। वैसे नौजवानों और उनके कुटुंबियों-संबंधियों को मैं यहां देख भी रहा हूँ। मेलिटिस उनमें से किसी को गवाही देने के लिए क्यों नहीं लाया ? मेलटिस और दूसरे फरियादी अगर इस बात को भूल गये हों तो मैं अब भी उन्हें इसकी इजाजत देता हूँ। वे खुशी से उनकी शहादत दिलायें। वे मेरे विरुद्ध बोलने के बदले यही कहेंगे कि मेरी संगति से उनके लड़कों को लाभ हुआ और उनके इस तरह मेरे पक्ष में बोलने में न्याय की बात कहने के सिवा उनका और कोई हेतु या स्वार्थ नहीं हो सकता।

मुझे अपने बचाव में जो कुछ कहना था, उसमें से बहुत-कुछ मैं कह चुका। हम लोगों में यह रिवाज है कि जिसके ऊपर मुकदमा चलाया जा रहा हो उसके घरवाले और निकट सम्बन्धी अदालत में आकर दुहाई देते हैं, दया की भीख मांगते हैं, अभियुक्त खुद भी रोता-कलपता है। मैं इनमें से कुछ भी नहीं करता, करना चाहता भी नहीं। इससे आपमें से किसीको मुझपर गुस्सा आ सकता है। मेरे बाल-बच्चे हैं—तीन बेटे हैं, एक बड़ा, दो छोटे। पर उनमें से किसीको मैं यहां बुलाना नहीं चाहता। इसमें मैं आपका अपमान नहीं समझता। आप भी इसे मेरा उद्धतपन न मानें। मैं मौत से नहीं डरता, इस बात को अलग रखें तो भी मैं ऐसा सोचता हूँ कि अपनी आयु और सही या गलत

प्रतिष्ठा का ख्याल रखते हुए अगर मैं अपने कुटुंबियों को लाकर आपके सामने रुलाऊं तो इसमें मेरी आपकी, दोनों की बेइज्जती है। इतना तो सभी मानते हैं कि साधारण मनुष्यों से सुकरात में कुछ विशेषता है। आप लोगों में कोई ऐसी विशेषता रखता हो और जिस तरह मुझपर मुकदमा चलाया जा रहा है उस तरह उसपर चलाया जा रहा हो, तो उसका मौत से डरकर रोना—कलपना लज्जाजनक कार्य माना जायगा। मौत आने में अगर कोई दुःख हो और एक बार उससे बच गये तो हम अमर हो जाते हों, तब तो सगे-सम्बन्धियों को लाकर विचारकों के दिल में दया का उद्रेक कराना कदाचित उचित भी ठहराया जा सके; पर जब हमारे श्रेष्ठजन सद्गुण-सम्पन्न होकर भी मौत से इस तरह डरेंगे तब तो परदेसी हमपर हँसना ही चाहेंगे। वे कहेंगे—"जो लोग अपने सद्गुणों के कारण दूसरों से ऊंचे माने जाकर बड़े ओहदे पाते हैं, वैसे एथेंसवासी भी जब औरतों से किसी तरह अच्छे नहीं तब यहां के और लोग तो कितने हलके होंगे।" इसलिए मैं मानता हूं कि किसी अच्छे आदमी को यह नाटक न करना चाहिए। कोई करना चाहे तो इस नगर की प्रतिष्ठा की खातिर आपको उसे इससे बाज रखना चाहिए। जनसाधारण का कर्त्तव्य है कि आप जो दण्ड दें उसे धीरज के साथ सह लें और आप लोगों का फर्ज है कि जो रुदन का नाटक करना चाहते हों, उन्हें धिक्कारें।

प्रतिष्ठा-अप्रतिष्ठा का विचार छोड़ दें तो भी मैं सोचता हूं कि अभियुक्त को दया की भीख नहीं मांगनी चाहिए। उसका फर्ज तो न्याय मांगना और उसके मिलने के लिए तथ्य, हकीकत विचारक के सामने रखकर उसपर दलील करना है। न्यायाधीश का कर्त्तव्य दया, कृपा करना नहीं; बल्कि निष्पक्ष होकर न्याय करना है। इसलिए हम और आप दोनों का फर्ज है कि कोई ऐसा काम न करें जिससे हमारी और आपकी कसम टूटे।

आपके सामने रो-गिड़गिड़ाकर मैं आपकी शपथ भंग कराने की कोशिश करूं तो मेलिटस ने ईश्वर को न मानने का जो इलजाम मुझपर लगाया है वह साबित हो गया-सा मान लिया जायगा। जो आदमी ईश्वर को मानता है वह दूसरे की कसम तुड़वाये तो वह ईश्वर से विमुख हुआ माना जायगा। अर्थात् यह कहा जायगा कि वह ईश्वर को नहीं मानता। पर मैं तो ईश्वर को इतनी दृढ़ता से मानता हूँ जितनी दृढ़ता से आप लोगों में से कोई भी न मानता होगा। इसलिए उसपर भरोसा रखकर मेरे बारे में जो ठीक हो वह करने के लिए अपने आपको बेधड़क आपके हाथ में सौंपता हूं।

[सुकरात अपनी सफाई में जो भाषण कर रहा था उसे यहां समाप्त कर दिया। पंचों ने बहुमत से अपराधी ठहराया। अनन्तर सुकरात ने उसे क्या सजा मिलनी चाहिए, इस विषय में बोलना आरम्भ किया :]

आप लोगों ने मुझे अपराधी ठहराया, इसका मुझे दुःख नहीं है। फिर आपका निर्णय अनसोची बात भी नहीं है। मुझे अचरज तो इस बात का है कि मेरे पक्ष में मत देनेवाले इतने अधिक निकले। मैं तो समझता था कि मेरे खिलाफ मत बहुत ज्यादा होंगे, पर मैं देखता हूं कि वे थोड़े ही (अधिक) हैं और तीस आदमी मेरे पक्ष में मत दे देते तो मैं छूट जाता। मैं यह भी देखता हूं कि मुझपर जो देवताओं को न मानने का इलजाम लगाया गया था, उससे मैं बरी कर दिया गया हूं।

अब आप मुझे मौत की सजा दे सकते हैं। इस बारे में मैं क्या कहूं। मैं चुप नहीं बैठा रहा। मैंने नौकरियां छोड़ीं, पदों की परवाह न की और घर-घर भटक कर लोगों से सद्गुणी होने के लिए कहा, इसके लिए मुझपर क्या जुर्माना किया जाय या दूसरी क्या सजा मिलनी चाहिए ? कोई व्यायामशाला में आपका मनोरंजन करे और आप सुखी हैं, यह भाव आपके मन में उत्पन्न करे तो आप उसे आश्रय-स्थान (प्रिटेनियन) में जगह देते हैं। मैंने आपको सुखी दिखाई देने का ही नहीं, सचमुच सुखी होने का रास्ता बताया है। इसलिए अगर मैं आपसे कुछ मांग सकूं तो यही कहूँगा कि मेरे बुढ़ापे में आपको आश्रय-स्थान में रखकर मेरा भरण-पोषण करना चाहिए।

आपके सामने अपराधी ठहराये जाने के बाद मैं इस तरह बातें करता हूं, इससे आप मान सकते हैं कि

मैं उद्धत, गुस्ताख हूं और सजा के बदले इनाम मांगता हूं, पर ऐसी बात नहीं है। आपके मुझे दोषी ठहराने के बाद भी मैं अपने-आपको निर्दोष मानता हूं। मैंने किसी की बुराई नहीं की। आप इस बात को नहीं समझ सके। कारण यह कि मेरे मामले का विचार कुल-जमा एक दिन चला। इतने थोड़े वक्त में मैं आपको कितना समझा सकता था। कुछ अधिक दिन आपके निकट रहा होता तो शायद आपको समझा सकता। पर मैं बेगुनाह हूँ, इसलिए खुद कोई सजा नहीं मांगता। मैं जेल जाऊं ? यह अनुचित है। मैं जुर्माना दूं ? मेरे पास इतना पैसा भी नहीं है। तब मैं देशनिकाले की सजा मांगूं ? यह मुझसे कैसे हो सकता है ? मुझे अपनी जान इतनी प्यारी नहीं है कि डर का मारा जहाँ-तहाँ ठोकरें खाता हुआ अपने बाकी के दिन पूरे करूं।

शायद कोई कहे कि अब तुम्हें अपना मुंह बंद कर एकांत में जा बैठना चाहिए। यह भी मुझसे होने वाला नहीं। मैं मानता हूँ कि मेरे लिए यह ईश्वर का आदेश है कि जिसे मैं सद्गुण समझता हूँ उसके बारे में लोगों के सामने विवेचन करूँ। मुझे ईश्वर का यह भी आदेश है कि नीति के नियमों की सदा खोज करता रहूँ। मैं मानता हूँ कि आप इसे नहीं समझ सकते, पर इस कारण मुझसे चुप नहीं रहा जा सकता।

[इसके बाद अदालत ने सुकरात को मौत की सजा का हुक्म दिया। इसपर महापुरुष सुकरात ने निर्भर होकर तुरन्त निम्नलिखित आशय का भाषण किया:]

यों भी अब मुझे थोड़े ही दिन जीना था। इतने थोड़े दिनों के लिए निर्दोष मनुष्य को मौत की सजा देकर आप अपयश के भागी हुए हैं। आपने थोड़े दिन सब्र किया होता तो मेरी मौत अपने आप आ जाती, क्योंकि मैं बहुत बूढ़ा हो चुका हूँ। मैंने आपके सामने हलकी किस्म की दलीलें रखी होतीं और चलते उपायों से काम लिया होता तो मैं मौत की सजा से बच गया होता, पर यह मेरा धर्म न था। मैं मानता हूँ कि स्वाधीन मनुष्य मौत या किसी दूसरे भय से छूटने के लिए कोई अयोग्य काम नहीं करेगा। मौत से बचने के लिए चाहे जैसे उपायों से काम लेना मनुष्य का कर्त्तव्य नहीं। युद्ध में जो आदमी हथियार डालकर शत्रु की शरण चला जाता है वह मरने से बच जाता है, पर हम उसे कायर कहते हैं। इसी तरह जो आदमी मौत से बचने के लिए अनीति वाले उपाय का अवलम्बन करता है वह नीच माना जाता है। मैं मानता हूँ कि नीचपने से बचना मौत से बचने की बनिस्बत अधिक कठिन है। कारण यह कि नीचता मौत से ज्यादा तेजी से दौड़ती है। आप उतावले और अविचारी हैं, इसलिए बिना विचारे तेजी से दौड़ती हुई अनीति का अनुसरण कर रहे हैं। आपने मुझे मौत की सजा दी है। मैं अब इस दुनिया से विदा हूँगा। मेरे विपक्षी सत्य को छोड़ देने और

अन्याय का आश्रय लेने वाले माने जायंगे। मैं अपनी सजा भोगूंगा भी। उन्हें अपनी करनी का फल भुगतना होगा। ऐसा ही हुआ करता है और यही ठीक भी होगा।

अब मरने से पहले दो शब्द मुझे आपसे कहने हैं। मैं मानता हूँ कि मेरे कारण आपको बहुत अड़चन है। पर मुझे अपने रास्ते से दूर करके आप अनीति के काम कर ही सकेंगे, यह नहीं मान लिया जा सकता। आप यह न समझें कि आपको कोई दोष न देगा। मुझे वधस्थल में ले जाने के पहले उन लोगों से, जिन्हें मेरे वचन पर विश्वास है, मैं दो शब्द कहूँगा। अतः जिन्हें मेरी बात सुननी हो वे ठहर जायं। मौत का जो अर्थ मैं समझता हूँ वह आपको बताना चाहता हूँ। आप यह मान लें कि मेरा जो कुछ होगा, अच्छा ही होगा। जो लोग मृत्यु को दुःख-रूप मानते हैं वे भूल करते हैं। मृत्यु के दो ही परिणाम हो सकते हैं : या तो आदमी के मर जाने पर उसका कोई अंश शेष नहीं रहता, उसका चेतन भी नष्ट हो जाता है, या फिर आत्मा एक से दूसरी जगह चली जाती है। अब अगर पहला परिणाम ठीक हो और चेतन आत्मा का नाश हो जाता हो तो यह एक महानिद्रा जैसी हुई। नींद को हम सुख-रूप मानते ही हैं। तब मृत्यु अगर महानिद्रा है तो अधिक सुखरूप होनी चाहिए। और अगर यह मानें कि मृत्यु से जीव एक से दूसरे स्थान को जाता है

तो जहाँ मेरे पुरखे मरकर गये वहीं मुझे भी जाना होगा। उनके साथ मुझे शुद्ध न्याय मिलेगा। इसमें कौन-सी बुराई मानें ? जहाँ होमर गया, जहाँ दूसरे महात्मा गये वहाँ मुझे जाना हो तो मैं बड़ा भाग्यशाली माना जाऊँगा। जहाँ अन्यायपूर्वक दंडित जीव पहुँचे हैं वहाँ पहुँचने में तो मैं अपना सम्मान समझता हूँ।

इतना तो आप पक्के तौर से याद रखें कि नीतिमान् मनुष्य को न जीने में दुःख होता है और न मरने में। ईश्वर ऐसे आदमी को छोड़ता ही नहीं। सत्यवान् को सदा सुखी मानिए। इसलिए आज ही मरकर शरीर के जंजाल से छूट जाने में मेरे लिए कोई दुःख नहीं। इस कारण मुझे मृत्युदंड देनेवालों या मुझपर इलजाम लगानेवालों के प्रति मेरे मन में कोई क्रोध नहीं। उन्होंने मेरी बुराई करने की नीयत रखी हो तो वे अवश्य निन्दा के पात्र हैं, पर मुझपर उनकी इच्छा का बुरा असर नहीं हो सकता।

मेरी अब आखरी मांग यह है कि मेरे लड़के जब बड़े हो जायं तब अगर वे नीति का मार्ग छोड़ दें और सद्गुण के बदले दौलत या दूसरी किसी चीज को अधिक प्यारी समझें तथा अपने में कुछ न होने पर भी अपने आपको बड़ा मानें, तो जैसे मैंने इन बातों के लिए आपकी निन्दा की और चेतावनी दी है, वैसे ही आप उन्हें दंड दें। आप ऐसा करेंगे तो

गांधीजी की अन्य पुस्तकें

सस्ता साहित्य मण्डल

चार आना